डाक पंजी. संख्या UA/DO/DDN/151/2022-2024

हरिद्वार, 8 अप्रैल, 2024 चैत्र कृष्ण, अमावस्या, 2080 विक्रम संवत

स्वदेश स्वाभिमान

मासिक वर्ष 11 अंक 02 पृष्ठ 08 ₹ 3/-

R.N.I. No.: UTTHIN/2013/51354

www.swadeshswabhiman.com
www.facebook.com/swadeshswabhiman
https://twitter.com/swadeshsw

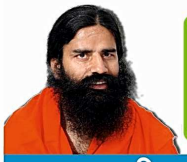

बच्चों जैसी निर्मलता व निर्भयता, जवानों जैसा जोश, प्रौढ़ जैसा होश व संन्यासी जैसा समर्पण- ये मेरे जीवन के आदर्श हैं।

भगवान् महान् कार्य करने के लिए तुम्हारा चयन करना चाहते हैं। तुम उस विराट् को अपने भीतर समग्रता से उतरने तो दो।

गुरुवाणी

आयुर्वेद अमृत

शाश्वत प्रज्ञा

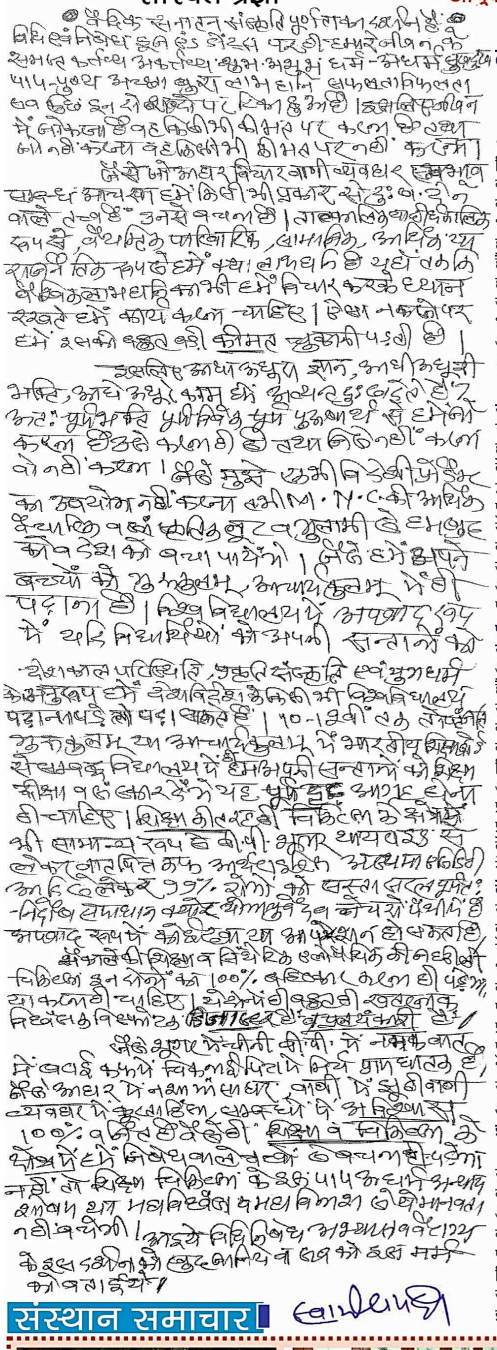

आयुर्वेद की विजय यात्रा, विजय गाथा

योग-आयुर्वेद को जन-जन तक पहुंचाने की यात्रा में संघर्ष, प्रयास और अनुसंधान

प्राचीनकाल में ही हम सुनते आए हैं कि 'पहला सुख-निरोगी काया'। संसार की कितनी भी ऊँचाइयों को हमें पाना हो, समुद्र की गहराइयों को नापना हो चाहे आसमान की ऊँचाइयों को छूना हो, जीवन में कितनी भी उन्नति या समृद्धि की ओर हमें बढ़ना हो, यदि सेहत (सुस्वास्थ्य) है तो सब कुछ है। जब व्यक्ति बीमार हो जाता है तो स्वयं ही नहीं अपितु सम्पूर्ण परिवार परेशान हो जाता है। साधन के साथ-साथ बहुत समय भी उसमें चला जाता है। इसके लिए हमारा आयुर्वेद हमेशा से कहता रहा है-

स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकार प्रशमनं। -(चरक संहिता, ३०.२६)

सुस्वास्थ्य है तो सब कुछ है- हमको ये ध्यान रखना है कि ये जो प्रिवेंशन है कि हम रोगी ही न हों, हमें उन उपायों को प्राथमिकता देनी चाहिए और वह उपाय आयुर्वेद व योग के द्वारा ही संभव है। आज मा.प्रधानमंत्री जी के पुरुषार्थ से पूरे विश्व के लोग 'इंटरनेशनल योगा डे' के रूप में योग को मान्यता प्रदान करके योग का आनंद और योग का लाभ उठा रहे हैं। प.पू.स्वामी जी महाराज ने आज योग को घर-घर तक, जन-जन तक पहुँचाया है।

पूरे विश्व में आयुर्वेद की प्रतिष्ठापना का संकल्प- विदेशों में जाकर आयुर्वेद अभी तक आयुर्वेद के रूप में प्रतिष्ठापित नहीं हो पाया है। कहीं न कहीं वह हर्बल मेडिसिन, फूड सप्लिमेंट के रूप में जाना जाता है। अज्ञानता को दूर करने के लिए पतंजलि ने बहुत सुंदर कार्य किया। हमारी साइंस ऑफ आयुर्वेदा जिसे हम 'आयुर्वेद सिद्धांत रहस्य' बोलते हैं आज दुनिया की ७० भाषाओं में वह पुस्तक प्रकाशित हो रही है। और हमें यह कहते हुए प्रसन्नता है कि संबंधित भाषा के लोग अपने देश में इस पुस्तक को छपवाकर अपने देश में वितरित कर रहे हैं।

देश-धर्म की सीमाओं से परे है आयुर्वेद- सबसे बड़ी प्रसन्नता की बात तो यह है कि दुनिया की सब भाषाओं में 'आयुर्वेद सिद्धांत रहस्य' प्रकाशित हो रही थी किंतु चाइना की भाषा में यह पुस्तक छपवाने के लिए बहुत सी क्वाइरीज और प्रश्नों का सामना हमें करना पड़ा क्योंकि चाइना वाले अपनी पद्धति के प्रति थोड़ा आग्रही होते हैं, लेकिन वहाँ भी यह पुस्तक प्रकाशित हुई और उर्दू में पाकिस्तान में भी यह पुस्तक छपी। यानि आयुर्वेद देश की सीमाओं को भी जोडने का कार्य करता है।

आयुर्वेद के विद्यार्थियों को 'विश्व जड़ी बूटी का इतिहास' पढ़ाए जाने की आवश्यकता-

जब आयुर्वेद की बात आती है तो कुछ सामान्य गलतियाँ हम भी करते हैं, आयुर्वेद के प्रबुद्ध व्यक्तियों से भी होती हैं जैसे हम आयुर्वेद के विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं आयुर्वेद का इतिहास। मैं आयुर्वेद के इतिहास को पढ़ाने का विरोधी नहीं हूँ परंतु हमें उन विद्यार्थियों को 'विश्व जड़ी बूटी का इतिहास'

शेष पेज नं. ३ पर...

वासंती नवसस्येष्ठी यज्ञ के साथ मनाया गया होलीकोत्सव

होलीकोत्सव : हिंदू धर्म में मान्यता है की नारायण नर के रूप में अवतार लेते हैं लेकिन स्वामी रामदेव ने नर से नारायण बनने का आदर्श प्रस्तुत किया : उमा भारती

प.पूज्य आचार्य जी महाराज ने पतंजलि परिवार के साथ-साथ समस्त देशवासियों को होली की शुभकामनाएं देते हुए यह संदेश दिया कि होली का त्यौहार प्रेम, एकता और आपसी सौहार्द का पर्व है। इसे व्यसन मुक्त रहते हुए प्रेमपूर्वक मनाएं। केमिकल युक्त रसायनों का प्रयोग ना करें, प्राकृतिक रंगों से होली को सार्थक बनाएं।

हरिद्वार। पतंजलि योगपीठ में वासंती नवसस्येष्ठी यज्ञ के साथ होलीकोत्सव मनाया गया। पतंजलि योगपीठ में आयोजित होलीकोत्सव कार्यक्रम में मध्य-प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मा. उमा भारती जी विशिष्ट अतिथि के रुप में मौजूद रही। कार्यक्रम में मौजूद परम पूज्य स्वामी जी महाराज और परम पूज्य आचार्य जी महाराज ने फूलों की होली खेली। होलीकोत्सव कार्यक्रम को संबोधित करते हुए परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहा कि पहले कहा करते थे राम आएंगे, अब तो राम आ गए हैं। राम राज्य भी आएगा।

■ पतंजलि योगपीठ में होलीकोत्सव उमा भारती रही विशिष्ट अतिथि

परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने देश की जनता सहित कार्यक्रम में मौजूद सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति हमेशा से विविधता में एकता का पर्याय रही है। होली का त्योहार विविधता में एकता तथा भाईचारे का प्रतीक है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में मौजूद पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने कहा कि हिंदू धर्म में मान्यता है कि नारायण नर के रूप में अवतार लेते हैं लेकिन परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने नर से नारायण बनने का आदर्श प्रस्तुत किया है। कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्य जी महाराज ने पतंजलि परिवार के साथ-साथ समस्त देशवासियों को होली की शुभकामनाएं देते हुए यह संदेश दिया कि होली का त्यौहार प्रेम, एकता और आपसी सौहार्द का पर्व है। इसे व्यसन मुक्त रहते हुए प्रेम पूर्वक मनाएं। केमिकल युक्त रसायनों का प्रयोग ना करें, प्राकृतिक रंगों से होली को सार्थक बनाएं। इस अवसर पर पतंजलि योगपीठ से संबद्ध सभी इकाइयों के इकाई प्रमुख, अधिकारी, कर्मचारी, संयासी व साध्वी, सभी शिक्षण संस्थानों के छात्र छात्राएं

FOOD CHEMISTRY

कोल्हू से निकाले गए सरसों के तेल से कैंसर का बचाव सम्भव!

» विश्व प्रसिद्ध रिसर्च जर्नल 'फूड केमिस्ट्री' ने माना कोल्हू के तैल में ऑउरेन्टियामाइड एसीटेट (Aurantiamide Acetate) नामक एन्टी कैंसर कम्पाउण्ड की पुष्टी

राष्ट्रीय, हरिद्वार। पतंजलि के द्वारा विश्व में प्रथम बार कोल्हू से निकाले सरसों के तेल के ऊपर अनुसंधान किया गया, जिससे यह प्रमाणित हुआ कि सिर्फ परम्परागत लकड़ी के कोल्हू से निकाला हुआ सरसों का तेल कैंसर से बचाने के साथ-साथ कैंसर को ठीक करने में भी मदद करता है। यह हम नहीं कह रहे अपितु विश्व प्रसिद्ध रिसर्च जर्नल 'फूड केमिस्ट्री (Food Chemistry)' में प्रकाशित रिसर्च के अनुसार कोल्हू से निकाले हुए सरसों के तैल में ऑउरेन्टियामाइड एसीटेट (Aurantiamide Acetate) नामक एन्टी कैंसर कम्पाउण्ड पाया जाता है। भारतवर्ष में पतंजलि ही वह नाम है जो अपनी पुरातन सनातन संस्कृति को आधुनिक विज्ञान सम्मत स्थापित करने के लिए कृत संकल्पित है। इस अनुसंधान को लेकर प.पू.स्वामी जी महाराज ने कहा कि यह अनुसंधान मात्र एक शोध न होकर हमारी गौरवशाली भारतीय परंपरा का एक प्रत्यक्ष परिणाम है कि किस प्रकार हमारी दिनचर्या में उपयोग होने वाले विभिन्न कार्यकलाप, हमें भिन्न प्रकार के रोगों से लड़ने में सहयोगी थे। यह शोध इस बात की भी पुष्टि करता है कि विज्ञान का वास्तविक अर्थ बड़ी-बड़ी मशीनें ही नहीं अपितु साधारण सी प्रतीत होने वाली तकनीकें हैं जो लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में एक बड़ी भूमिका निभाएगी।

भारतीय सनातन परम्परा प्रकृति अनुकूल विकास व सहज सरल जीवनशैली की पोषक व उसकी संवाहक थी। यह बात हम ही नहीं कह रहे हैं अपितु विश्व प्रसिद्ध रिसर्च जर्नल भी प्रामाणित कर रहा है। सदियों पुरानी कोल्हू से तेल निकालने की परम्परा न केवल वैज्ञानिक है अपितु इससे प्रकृति की रक्षा, कुटीर उद्योग के माध्यम से अधिसंख्यक लोगों को रोजगार व सड़कों पर दर-दर ठोकरें खाते हुए, विचरण करते हुए गोवंश आधारित उद्योग को पुर्नस्थापित किया जा सकेगा।

https://www-sciencedirect-com/science/article/pii/S0308814624005193
https://pubmed-ncbi-nlm-nih-gov/38430771/

संस्थान समाचार

धर्मपुर (हैदराबाद) Global Spiritual Seminar में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी एवं गणमान्यगण।

पतंजलि योगपीठ में आगमन हुआ राष्ट्र संत, नेपाल केसरी डॉ. मणिभद्र जी महाराज 'सर्वोदय शांति यात्रा' पर।

सुत्तूर मठ, मैसूर (कर्नाटक) प.पू.स्वामी जी महाराज, पूज्य शिवरात्रि देशीकेन्द्र महास्वामी जी महाराज।

ब्रुमेट साधना केन्द्र, ऋषिकेश में श्रीचन्द्र स्वामी के ब्रह्मलीन होने पर पूज्य संतगणों ने श्रद्धांजलि दी।

विवि के 'अभ्युदय वार्षिकोत्सव' पर प.पू.आचार्य श्री, श्री बी.एल. वर्मा जी, श्री हरकसिंह रावत जी।

हैदराबाद में प.पू.आचार्य जी महाराज, दादा श्री कमलेश पटेल जी, स्वामी चिदानन्द मुनि जी।

जिज्ञासा कार्यशाला : जनजाति समूह के ज्ञान परम्परा का हो संरक्षण

पतंजलि अनुसंधान संस्थान में 'जिज्ञासा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहां देशभर के छात्र-छात्राओं तथा वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. निर्मल कुमार अवस्थी (अध्यक्ष, परंपरागत ज्ञान एवं वनौषधि विकास फाउंडेशन) तथा डॉ. सुशील कुमार उपाध्याय (पूर्व डिप्टी डायरेक्टर NMPB, आयुष मंत्रालय) मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता ने परंपरागत औषधीय ज्ञान तथा वनौऔषधि के संरक्षण, संवर्धन पर जोर दिया। कार्यक्रम के समापन के अवसर पर परम पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज ने संबोधित करते हुए पतंजलि द्वारा किए जा रहे कार्यों से अवगत कराया। विश्व भेषज संहिता, सौमित्रय संहिता सहित औषधीय पादप म्यूजियम तथा साक्ष्य आधारित पर आयुर्वेद पर बल दिया।

स्वस्थ, सुखी व शान्तिमय जीवन के लिए योग सीखिए, रोज सुबह 5:00 से 7:30 बजे आस्था पर

» पतंजलि विश्वविद्यालय में 'अभ्युदय वार्षिकोत्सव' उत्साह पूर्वक मनाया गया।

» प.पूज्य स्वामी जी महाराज व प.पूज्य आचार्य जी महाराज ने योग, आयुर्वेद को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्रदान की : बी.एल. वर्मा

हरिद्वार। पतंजलि विश्वविद्यालय व पतंजलि आयुर्वेद कॉलेज के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम 'अभ्युदय' के दूसरे दिन क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ प्रारंभ की गईं। प्रतियोगिताओं की शुरूआत पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति परम पूज्य आचार्य जी महाराज, मा. केन्द्रीय राज्य सहकारिता मंत्री श्री बी.एल. वर्मा, मा. सहकारिता मंत्री उत्तराखण्ड धनसिंह रावत तथा सहकारिता निबंधक आलोक पाण्डे ने दीप प्रज्ज्वलन कर की। इसके पश्चात माननीय अतिथियों ने कबड्डी व रस्साकसी प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया।

> ■पतंजलि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में उन्हें पूरा भारत दिखाई दे रहा है।

इस अवसर पर श्री वर्मा ने कहा कि परम पूज्य स्वामी जी महाराज व परम पूज्य आचार्य जी महाराज ने योग, आयुर्वेद को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्रदान करने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि पतंजलि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में उन्हें पूरा भारत दिखाई दे रहा है। यहाँ शिक्षा के साथ-साथ योग, संस्कृति व खेलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री भी निरंतर खेलों को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, खेलो इण्डिया, फिट इंडिया इसी को इंगित करते हैं। आप सभी पतंजलि विश्वविद्यालय, अपने प्रांत व देश को आगे बढ़ाने का कार्य करें। कार्यक्रम में प.पू.आचार्य जी महाराज ने कहा कि पतंजलि विश्वविद्यालय प.पू. स्वामी जी महाराज के पुरुषार्थ से अनुप्रणित है। हमारा ध्येय विद्यार्थियों का शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक रूप से विकास करना है, जो खेलों से ही संभव है। उत्तराखण्ड के मा.सहकारिता मंत्री श्री धनसिंह रावत ने कहा कि पतंजलि वि.वि. निरंतर उन्नति की ओर गतिमान है। उन्होंने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्ति की जानकारी दी।

प्रातःकालीन सत्र में मुख्य महाप्रबंधक ब्रिगेडियर टी. सी. मल्होत्रा (से.नि.) ने कहा कि मैंने सेना में ३५ वर्ष सेवा दी है जहाँ खेलों का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। उन्होंने कहा कि खेलों का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है, यह मात्र शारीरिक व्यायाम नहीं अपितु बहुत कुछ सिखाता है। खेलों से टीम भावना विकसित होती है। डॉ. मयंक अग्रवाल ने कहा कि अभ्युदय कार्यक्रम में मुझे सभी प्रतिभागियों के चेहरों पर अभ्युदय दिखाई पड़ रहा है। अभ्युदय का अर्थ है लौकिक उत्कर्ष, उन्नति और निरंतर उन्नति। अर्थात् हमें विश्वविद्यालय को निरंतर उन्नति के पथ पर ले जाना है। खेल हमें शारीरिक तथा मानसिक विकास के साथ-साथ खेल भावना तथा आध्यात्मि विकास की ओर ले जाते हैं। मानसिक व्यायाम से हममे तीव्र गति से निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित होती है। आज क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में रस्साकसी, कबड्डी, खो-खो के अनेक खिलाड़ियों ने अपना दमखम दिखाया।

स्वार्थ से ऊपर उठकर ही मनुष्य परमार्थी बनता है : जैन मुनि

» जैन मुनि डॉ. मणिभद्र की 'सर्वोदय शांति यात्रा' के मध्य पतंजलि योगपीठ में पड़ाव

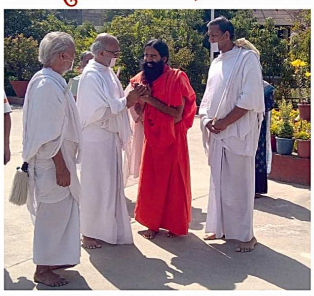

जैन मुनि लगभग 90 हजार किमी. की पदयात्रा कर चुके हैं जिसमें कन्याकुमारी, जम्मू, मुम्बई, गुजरात, कोलकाता, गुवाहाटी, मेघालय, भूटान व सम्पूर्ण नेपाल शामिल हैं।

हरिद्वार। राष्ट्र संत, नेपाल केसरी डॉ. मणिभद्र जी महाराज 'सर्वोदय शांति यात्रा' पर हैं, यह वर्तमान पद यात्रा मेरठ से लेकर बद्रीनाथ धाम तक जाएगी। यात्रा का दो दिवसीय पड़ाव पतंजलि योगपीठ बना है जहाँ उनकी भेंटवार्ता पतंजलि योगपीठ के परमाध्यक्ष योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज से हुई। परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने जैन मुनि का भव्य स्वागत करते हुए कहा कि जैन मुनि डॉ. मणिभद्र जैन धर्म के महान संत हैं। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन सत्यान्वेषी है जिसमें जैन श्रमण, साधु, साध्वी एक स्थान पर न रहकर विहार भ्रमण करते रहते हैं, यह यात्रा भी उसी का विग्रह रूप है। स्वामी जी ने कहा कि जैन धर्म में अहिंसा, तप, दान और शील को मुक्ति का मार्ग बताया गया है।

इस अवसर पर जैन मुनि ने कहा कि पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी महाराज से उनका भ्रातावत आत्मीय सम्बंध है। पतंजलि योगपीठ भ्रमण का उनका यह तीसरा अवसर है। इससे पूर्व वे २००७ व २०११ में पतंजलि योगपीठ पधारे थे। पतंजलि के विविध सेवा प्रकल्पों यथा- पतंजलि अनुसंधान संस्थान, पतंजलि वैलनेस सेंटर, पतंजलि कन्या गुरुकुलम् व पतंजलि आयुर्वेद हॉस्पिटल आदि का भ्रमण कर उन्होंने कहा कि गत यात्रा के पश्चात पतंजलि ने अपनी सेवापरक गतिविधियों में अभूतपूर्व विस्तार किया है। उन्होंने कहा कि परम पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज के नेतृत्व में पतंजलि योगपीठ आयुर्वेद अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रहा है। डॉ. मणिभद्र ने कहा कि वनस्पतियों व पर्यावरण के लिए परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज व परम पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज के पुरुषार्थ को देखकर सुखद अनुभूति हुई। उन्होंने बताया कि वनस्पतियों में २४ लाख प्रकार का वर्णन है। इनका पता व इन पर अनुसंधान आप्त पुरुष ही कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पतंजलि ने ४ लाख वनस्पतियों पर अनुसंधान कर आयुर्वेद के रहस्यों को उजागर किया है। यह सम्पूर्ण मानव जाति की ही नहीं, पर्यावरण की भी सेवा है। जैन मुनि ने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा, पंचकर्म, षट्कर्म, योग, आयुर्वेद के द्वारा चिकित्सकीय सेवाएँ, शिक्षा, कृषि, अनुसंधान, गौ-संरक्षण, उद्योग आदि की एक ही स्थान से उत्कृष्ट सेवाओं की व्यक्ति मात्र कल्पना कर सकता है किन्तु पतंजलि योगपीठ ने इसे साकार रूप दिया है। पतंजलि की सेवाओं का लाभ वैश्विक स्तर पर लाखों-करोड़ों लोगों को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि स्वार्थ से ऊपर उठकर ही मनुष्य परमार्थी बनता है।

ज्ञात हो कि जैन मुनि डॉ. मणिभद्र आजीवन पदयात्री हैं जो वर्ष में ८ माह भ्रमण करते हैं तथा ४ माह विराम रहता है, चतुर्मास में यात्रा नहीं होती। उनकी यात्रा निरंतर चलती रहती है जिसमें बिना कारण २८ दिन से अधिक का विराम नहीं रहता। २३ फरवरी से प्रारंभ उनकी वर्तमान यात्रा मेरठ से प्रारंभ हुई है जो बद्रीनाथ धाम तक जाएगी। इससे पूर्व जैन मुनि लगभग ६० हजार किलो मीटर की पदयात्रा कर चुके हैं जिसमें कन्याकुमारी से जम्मू, मुम्बई, गुजरात, कोलकाता, गुवाहाटी, मेघालय, भूटान व सम्पूर्ण नेपाल इत्यादि शामिल हैं। इस उपलक्ष्य में उप-प्रवर्तक अभिषेक मुनि जी तथा उप-प्रवर्तक आशीष मुनि जी भी उपस्थित रहे।

संत समाज की दिव्य विभूति थे ब्रह्मलीन श्रीचन्द्र स्वामी :स्वामी जी

हरिद्वार। उदासीन अखाड़े से जुड़े साधना केन्द्र आश्रम के अध्यक्ष श्रीचन्द्र स्वामी के ब्रह्मलीन होने पर विभिन्न अखाड़ों के संतों ने शोक व्यक्त कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने श्रद्धांजलि संदेश में कहा कि ब्रह्मलीन श्रीचन्द्र स्वामी संत समाज की दिव्य विभूति और महान् आत्मा थे। उनके ब्रह्मलीन होने से श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन अखाड़े और समस्त आध्यात्मिक जगत को भारी क्षति हुई है। इसे पूरा करना असंभव होगा। पूज्य आचार्य जी ने कहा कि ब्रह्मलीन श्रीचन्द्र स्वामी जी महाराज ने अपने दिव्य ज्ञान से पूरी दुनिया में सनातन धर्म संस्कृति और आध्यात्मिकता को आगे बढ़ाया। श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन के महंत रघुमुनि जी महाराज ने कहा कि सनातन धर्म संस्कृति के प्रचार प्रसार के साथ अखाड़े की परम्पराओं को आगे बढ़ाने में ब्रह्मलीन संत का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

कार्यशाला : पतंजलि विश्वविद्यालय में दर्शन एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन ।

» कार्यशाला में दर्शन और संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का रख-रखाव एवं संयोजन कम्प्यूटर में कैसे समायोजित करें पर चर्चा ।

हरिद्वार। पतंजलि विश्वविद्यालय में मानविकी एवं प्राच्य विद्या संकाय के अन्तर्गत दर्शन एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में "Sanskrit Computational linguistics" विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए परम पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज कुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय ने कहा कि पतंजलि विश्वविद्यालय प्राचीन एवं आधुनिकता को एक साथ लाकर नवीन प्रतिमान स्थापित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत न केवल नये अनुसंधान सम्मिलित है बल्कि प्राचीन एवं दुर्लभ ग्रंथों को भी कम्प्यूटर की भाषा में सरल, पाठ्य एवं संकलित किया जा रहा हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यशाला के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प.पू.स्वामी जी महाराज ने कहा कि आने वाले समय में प्राचीन शिक्षा प्रणाली के साथ आधुनिक और वैज्ञानिक संसाधनों की आवश्यकता होगी। अष्टाध्यायी जैसी प्राचीन और प्रामाणिक व्याकरण शास्त्र को कम्प्यूटर के माध्यम से कैसे समझा और समझाया जा सकता है, इस विषय में स्वामी जी ने अपना व्यापक दृष्टिकोण रखा।

कार्यशाला का विषय भी यही रहा कि दर्शन और संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का रख-रखाव एवं संयोजन कम्प्यूटर में कैसे समायोजित किया जा सकता है। इसके लिए कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय और शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, केरल से आए हुए विद्वानों ने सभी विद्यार्थियों को कम्प्यूटर लैब में इस विषय पर प्रायोगिक जानकारी प्रदान की। इसी क्रम में स्ट्रक्चर ऑफ लेग्वेंज विषय पर प्रोफेसर शिवानी, मोर्फोलॉजी पर डॉ. स्वाति बासापुर, इन्पुट मैथड्स फॉर इंडियन लैंग्वेज सिद्धान्त एवं प्रयोग, टैगिंग-टैक्ट्स विषय पर आचार्य चैतन्य एवं आचार्य नवीन के. कौशिक ने, कोश-प्रैक्टिकल डेटाबेस पर प्रोफेसर शिवानी एवं विदुषी अरूणा ने विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की मानविकी संकायाध्यक्षा साध्वी डॉ. आचार्या देवप्रिया जी ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में विद्यार्थियों को कम्प्यूटर भाषा ज्ञान के साथ-साथ मूल ग्रंथों का गहराई से अध्ययन पर बल दिया। कार्यशाला में दर्शन एवं संस्कृत विभाग के समस्त प्राध्यापकगणों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

महिला महासम्मेलन : राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन, आर्थिक आजादी अभी मिलना बाकी है : पूज्य स्वामी जी महाराज

सीकर (राजस्थान)। पतंजलि विश्व विद्यालय और महिला पतंजलि योग समिति की ओर से सांवली रोड पर रामजी पैलेस में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मानसिक व शारीरिक तनाव को दूर करने के लिए योग, प्राणायाम स्वस्थ जीवन जीने का संदेश दिया गया। योगासनों की प्रस्तुति दी गई। महिलाओं ने फूलों की होली खेली और सामूहिक नृत्य भी किया।

इस दौरान प.पू.स्वामी जी महाराज ने सम्मेलन को वर्चुअल संबोधित करते हुए कहा कि हम राजनीतिक आजादी तो मिल गई। लेकिन, आर्थिक आजादी अभी मिलना बाकी है। हमने आर्थिक, वैचारिक, सांस्कृतिक व आचार विचार की गुलामी की चादर ओढ़ रखी है। योग कर इंसान सुख और समृद्धि के साथ स्वास्थ्य की दुर्बलता पर सफलता हासिल कर सकता है। सम्मेलन में महिला मुख्य केन्द्रीय प्रभारी साध्वी डॉ. देवप्रिया जी ने कहा कि वर्तमान में घर-घर में मानसिक तनाव के रोगी सामने आ रहे हैं। जबकि योग मानसिक तनाव का उपाय है। योग, प्राणायाम, ध्यान व सेवा से हम दूसरों को भी सुख दे सकते हैं। सांसद सुमेधानन्द ने कहा कि परिवार में नियमित योग, प्राणायाम व सत्संग हो तो संतान का बिगाड़ नहीं हो सकता। सम्मेलन में राज्य महिला प्रभारी बहन विजय लक्ष्मी जी, राज्य कार्यकारिणी सदस्य बहन सरिता जी, भारत स्वाभिमान राज्य प्रभारी भाई अरविंद जी, भाई विनोद जी ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. बीएल रणवां, भाजपा नेता इंद्रा चौधरी, पतंजलि प्रभारी पवन जी, राज्य युवा प्रभारी संदीप जी, कर्मपाल, सरदार बलदेव, सोशल मीडिया प्रभारी बहन सुनीता, जिला प्रभारी पुष्पा भास्कर, संतरा, बृजमोहन आदि मौजूद थे।

कार्यकर्ता बैठक : दैनिक योग-कक्षा गांव, तहसील तक होगा विस्तार

»मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी की पवित्र जन्म भूमि अयोध्या धाम में आधुनिक भारत के राष्ट्रनायक परम पूज्य स्वामी जी महाराज का वर्चुअल आशीर्वाद मिला।

अयोध्या (उत्तर प्रदेश)। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी की पवित्र जन्म भूमि अयोध्या धाम में आधुनिक भारत के राष्ट्रनायक परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के परम शिष्य आदरणीय श्री राकेश कुमार जी (मुख्य केन्द्रीय प्रभारी) के सान्निध्य में अयोध्या धाम विनायक गेस्ट हाउस में पतंजलि परिवार, उत्तर प्रदेश पूर्व के २५ जिलों के कार्यकर्ताओं हेतु आयोजित निःशुल्क इंटीग्रेटेड योग-कक्षा एवं कार्यकर्ता बैठक हुई। इस अवसर पर सभी आगंतुको को परम पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा वर्चुअल रूप से मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

> योग, आयुर्वेद, स्वदेशी एवं भारतीय शिक्षा को तहसील स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना है।

आदरणीय मुख्य केन्द्रीय प्रभारी जी ने योग, आयुर्वेद, स्वदेशी, भारत-भारतीयता, सनातन ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति-संस्कार समेत आधुनिक युग के विविध षड्यंत्रों पर प्रमुखता से अपने विचार रखते हुए सभी आगंतुको को लाभान्वित किया। उन्होंने कहा कि आज का समय एक जूट होकर योग, आयुर्वेद, स्वदेशी एवं भारतीय शिक्षा को तहसील स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि अब हर कार्यकर्ता को प्रत्येक दिवस अलग-अलग गांव, तहसील पर एंटीग्रेटिड योग-कक्षा लगानी है व योग से होने वाले लाभों को बताना है। इस अवसर पर पतंजलि परिवार, उत्तर प्रदेश-पूर्व एवं उत्तर प्रदेश-मध्य के सभी संगठनों (भारत स्वाभिमान न्यास, पतंजलि योग समिति, पतंजलि किसान सेवा समिति, युवा भारत एवं सोशल मीडिया के राज्य प्रभारी गण, सह-राज्य प्रभारीगण, सम्मानित राज्य कार्यकारिणी सदस्य, जिला प्रभारीगण, जिला कार्यकारिणी सदस्य, योग शिक्षक एवं सम्मानित देवतुल्य कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

स्वरोजगार : गुणवत्ता युक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम से महिलाओं के जीवन में हो रहा है विशेष परिवर्तन : श्री प्रदीप पांडेय

»पतंजलि ने IRULA (Indian Rural Art) के माध्यम से स्वरोजगार को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण कदम उठाया : आचार्य श्री

उत्तराखंड राज्य आजीविका मिशन (USRLM) के सहयोग से पतंजलि के समृद्ध ग्राम ट्रेनिंग सेंटर में उत्तराखंड के विभिन्न जिलों से आयी स्वयं सहायता समूह की बहनों को Traditional Eco Art की ट्रेनिंग माध्यम से उत्तराखंड की पारंपरिक कला 'ऐपन' को स्वरोजगार के साथ जोड़कर आगे बढ़ाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी बहनों को IRULA hyper local model से जुड़कर व्यापार एवं आजीविका अभिवृद्धि हेतु भी प्रशिक्षण दिया गया। इस पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के अवसर पर सभी बहनें पतंजलि के प्रति कृतज्ञता तथा अपनी आजीविका अभिवृद्धि के प्रति दृढ़ संकल्पित दिखी। इस कार्यक्रम के समापन के अवसर पर पतंजलि समूह के सह संस्थापक श्री आचार्य बालकृष्ण जी भी उपस्थित रहे। उन्होंने सभी महिलाओं को सर्टिफिकेट्स भी वितरित किए और कहा कि उत्तराखंड की पारंपरिक कला को बढ़ावा देना तथा महिलाओं के जीवन में आजीविका अभिवृद्धि तथा आत्मनिर्भरता लाना इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हैं।

इससे प्रशिक्षकों महिलाओं में गजब का उत्साह देखने को मिला। गौरतलब है कि इस कार्यक्रम में महिलाओं को दिया, साड़ी, कुर्ता, Wooden block, कैनवास तथा वाल पेंटिंग के माध्यम से कला में कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया गया। इस पावन अवसर पर उत्तराखंड राज्य आजीविका मिशन के एडिशनल सीईओ श्री प्रदीप पांडेय जी ने भी पतंजलि के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर बनस्थली विश्वविद्यालय राजस्थान से आयी प्रोफेशनल्स की टीम के साथ साथ समृद्ध ग्राम की टीम भी उपस्थित रही।

कार्यशाला: स्वयं सहायता समूहों का रिकॉर्ड ऑनलाइन होगा

»पतंजलि विवि में लोक्स एप से की जाने वाली क्षेत्रीय कार्यशाला प्रारम्भ.....

हरिद्वार। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के रिकार्ड्स को डिजिटाइज किये जाने हेतु तैयार किये गए LokOS App से सम्बंधित दिनांक ०४-०७ मार्च २०२४ तक सम्पादित की जाने वाली ०४ दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार में किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में पतंजलि योगपीठ के सह-संस्थापक आचार्य श्री बालकृष्ण, के साथ उत्तराखंड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (USRLM) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अनुज गोयल, वित्त नियंत्रक श्री भूपेंद्र प्रसाद कांडपाल, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री प्रदीप कुमार पाण्डेय तथा NRLM-NMMU के राष्ट्रीय मिशन प्रबंधक श्री प्रभात द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। कार्यशाला में भारत सरकार की संयुक्त सचिव श्रीमती स्मृति सरन, उप-सचिव सुश्री निवेदिता प्रसाद द्वारा वर्चुअली सम्बोधित करते हुए LokOS की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों का मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यशाला का आयोजन उत्तराखंड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (USRLM) द्वारा किया जा रहा है। कार्यशाला में देश के १० राज्यों उत्तर प्रदेश, अरुणांचल प्रदेश, लद्दाख, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, अंडमान-निकोबार, जम्मू- कश्मीर, उत्तराखंड द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए पतंजलि योगपीठ सह-संस्थापक प.पूज्य आचार्य जी महाराज द्वारा NRLM द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु किये जा रहे विभिन्न कार्यों एवं गतिविधियों की सराहना करते हुए पतंजलि को National Resouce Organization (NRO) के रूप में चयनित करने हेतु धन्यवाद् व्यक्त किया गया। उनके द्वारा कहा गया कि पतंजलि द्वारा भी १० लाख महिला शक्ति के साथ योग शिक्षिकाओं के रूप में देश के विभिन्न राज्यों में कार्य किया जा रहा है। पतंजलि द्वारा किये जा रहे कार्यों को डिजिटाइज किये जाने पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा NRLM द्वारा महिला स्वयं सहायता समूहों के कार्यों को LokOS App के माध्यम से डिजिटाइज करने हेतु सहयोग किये जाने की बात कही गयी। USRLM के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अनुज गोयल द्वारा डिजिटाइजेशन पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि माननीय प्रधानमंत्री जी के संकल्प के अनुरूप USRLM द्वारा की जा रही गतिविधियों लखपति दीदी, LokOS आदि पर तेजी से कार्य किया जा रहा है। LokOS द्वारा समूहों के कार्यों को डिजिटाइज किया जाना भी मा.प्रधानमंत्री जी के संकल्प को सिद्ध किये जाने की शुरुआत है।

कार्यशाला के प्रथम दिवस NRLM-NMMU के राष्ट्रीय मिशन प्रबंधक श्री प्रभात द्वारा LokOS एंट्री के साथ ही समूहों के लेन-देन की प्रविष्टियों पर विस्तारपूर्वक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रतिभागियों को बताया गया। कार्यशाला का संचालन करते हुए USRLM के अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री प्रदीप कुमार पाण्डेय द्वारा किये जा रहे कार्यों एवं उपलब्धियों की जानकारी प्रदान करते हुए ०४ दिवसीय कार्यशाला के महत्व एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया।

कार्यशाला में NRLM&NMMU के प्रबंधकों तथा NIRD-PR हैदराबाद से आये मास्टर ट्रेनर्स के साथ ही USRLM के राज्य एवं जनपद स्तर के कार्मिकों द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है।

आयुर्वेद अमृत

.....शेष पेज नं. 1 का

पढ़ाने की आवश्यकता है। क्योंकि यदि हम बच्चों को वर्ल्ड बोटनी बेस्ड मेडिसिन् सिस्टम पढ़ाएँगे तो हमें यह पता चलेगा कि आयुर्वेद कहाँ पर खड़ा है।

पैथियों में भेद लेकिन सभी पैथी में प्रथम लक्ष्य रोगी को निरोगी बनाना-

यदि हम सरकार की पॉलिसी की बात करें तो भारतवर्ष में हम दो धाराओं में रोगों को ठीक करने की बात या रोगी को निरोग करने की बात करते हैं। चाहे वह किसी भी पैथी में प्रेक्टिस कर रहा हो, अंततः हम सबका लक्ष्य तो एक ही है। किसी भी पद्धति के चिकित्सक के पास यदि कोई रोगी आता है तो वह प्रयास करता है कि मुझे इस रोगी को ठीक करना है।

चाइनीज मेडिसिन सिस्टम वाला यूएसए में चाइनीज मेडिसिन सिस्टम को यूएसए में धड़ल्ले से कर सकता है क्योंकि उसकी डिग्री यूएसए में मान्य है परंतु मुझे पीड़ा होती है कि हमारा आयुर्वेद का बीएएमएस/एमडी यूएसए जाता है तो रोगी को छू भी नहीं सकता, उसे वहाँ सर्टिफिकेट लेना पड़ता है जिसके बाद वह थेरेपिस्ट का काम करता है, उससे पहले वह भी नहीं कर सकता था। उससे हमें कितनी बड़ी हानि हो गई, हमारा देश से बाहर जाने का दरवाजा बंद हो गया। आज हम भी आयुर्वेदिक दवाएँ दुनिया में पहुँचा रहे हैं परंतु हर्बल सप्लीमेंट व फूड सप्लीमेंट के रूप में। यूएस एफडीए के जो प्रोटोकॉल्स हैं, जो स्टैंडर्ड हैं, हम उन्हें पूरा करते हैं।

आयुर्वेद की वैश्विक स्थापना आवश्यक, वर्ल्ड हर्बल इंसाइक्लोपीडिया कालजयी ग्रंथ-

वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद को आयुर्वेद के रूप में स्थापित करना अभी शेष है। इसके लिए हमने वर्ल्ड हर्बल इंसाइक्लोपीडिया के रूप में बड़ा कार्य प्रारंभ किया। यह पतंजलि के द्वारा प्रारंभ किया गया कालजयी कार्य है। पूरी दुनिया में जो पादप जगत है उसमें लगभग ३ लाख ६० हजार प्लांट्स बॉयोडायवर्सिटी पूरे विश्व में है। पहली बार पतंजलि ने यह चौकलिस्ट बनाने का प्रयास किया कि पूरे विश्व में कितने प्लांट्स हैं जो मेडिशनली प्रयोग किए जा रहे हैं या किए जा सकते हैं। यह काम करते हुए ही हमें पता चला की १९९९ में यह कार्य विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने भी शुरू किया था, १४७ मोनोग्राफ उन्होंने बनाए हैं, ५ वाल्यूम में छोटी-छोटी किताबें छापी गई हैं। बाद में २०१० में WHO ने यह कहकर इस कार्य को बंद कर दिया कि 'यह कार्य तो असंभव जान पड़ता है।' WHO की साइट पर अभी भी आप यह जानकारी देख सकते हैं। पतंजलि ने जब यह कार्य प्रारंभ किया तब हमें पता भी नहीं था कि WHO ने यह कार्य प्रारंभ करके बंद भी कर दिया है। किंतु आज हमें यह कहते हुए गर्व होता है कि पतंजलि ने असम्भव को सम्भव करके दिखाया।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पतंजलि अनुसंधान की स्वीकार्यता-

अभी अनुसंधान की बात करें तो कोरोना के ऊपर आयुष मंत्रालय और भारत सरकार के प्रयास से अंतराष्ट्रीय स्तर पर केवल २ रिसर्च पेपर्स पब्लिश हुए हैं तथा दोनों का रिव्यू पतंजलि से ही हुआ है। हमें इस बात को कहते हुए प्रसन्नता व गर्व की अनुभूति होती है कि पतंजलि ने २८ रिसर्च पेपर्स हाई इम्पैक्ट वाले अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च पेपर्स में पब्लिश किए। कोरोना पर इंडिविजुअल इंस्टीट्यूट के रूप में सबसे ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च पेपर्स पतंजलि ने ही प्रकाशित किए हैं, यह आयुर्वेद की सबसे बड़ी यात्रा, विजय गाथा है।

भेटवार्ता: पूज्य आचार्य जी से मिले पूर्व खेल मंत्री नारायण सिंह

पतंजलि योगपीठ आगमन पर चल रही विभिन्न सेवा प्रकल्पों का अवलोकन किया।

हरिद्वार। हरिद्वार। क्रीड़ा भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व खेल मंत्री नारायण सिंह राणा ने पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार पहुंचकर परम पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज से भेंट की। इस दौरान नारायण सिंह राणा ने कहा कि योग और आयुर्वेद के क्षेत्र में पतंजलि अहम योगदान कर रही है। पतंजलि द्वारा संचालित विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में खेलों को जिस प्रकार बढ़ावा दिया जा रहा है, वह प्रशंसनीय है।

उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है। मा.प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की खेल नीति का लाभ उत्तराखण्ड के युवाओं को भी मिल रहा है। उत्तराखण्ड की खेल प्रतिभाएं विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश व राज्य का नाम रोशन कर रही हैं।

योग शिविर : दैनिक योग से ही स्वस्थ व समृद्ध बने रह सकते है

» सभी को योग, प्राणायाम व यज्ञ को नियमित अपने दिनचर्या में अपनाना चाहिए।

जालना (महाराष्ट्र)। योग ऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के शिष्य स्वामी डॉ. परमार्थ देव की उपस्थिति में मातोश्री गार्डन मंगल कार्यालय में दो दिवसीय योग सत्संग शिविर का आयोजन किया गया। इस बार शिविर का उद्घाटन स्वामी परमार्थ देव ने किया था। इस योग शिविर में जिले के जालना, मंथा, भोकरदन, अंबर तालुका के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया एवं बड़ी संख्या में योगसाधकगण ने भी योग शिविर में योगाभ्यास किया।

स्वामी परमार्थ देव ने योग, आयुर्वेद, स्वदेशी, घरेलू उपचार, भारतीय शिक्षा, संस्कार आदि पर मार्गदर्शन दिया। हमारे दो कान, दो नासिका, दो आंखें और मुंह ही सप्तर्षि हैं। यदि मनुष्य सुख, संतोष और शांति चाहता है तो उसे इन सात इंद्रियों पर नियंत्रण रखना होगा। यही इंद्रियाँ व्यक्ति और समाज के अच्छे और बुरे कर्मों के मूल में काम करती हैं। कोरोना ने बहुत कुछ सिखाया है, उसमें सभी को नित्य रूप से योग, प्राणायाम व यज्ञ नियमित अपने दिनचर्या में अपना चाहिए। स्वामी परमार्थदेव जी ने कहा कि अब समाज को मूल भारतीय संस्कृति, मूल्यों और विचारों की ओर लौटना होगा। शिविर का आयोजन पतंजलि परिवार की ओर से किया गया है। इस अवसर पर राजेंद्र शेटे, मुकुंद जागीरदार, अशोक तारडे, बापू पडलकर, उदय वाणी, नितिन अग्रवाल, तुकाराम डोंगरे आदि उपस्थित थे।

■ यदि मनुष्य सुख, संतोष और शांति चाहता है तो उसे इंद्रियों पर नियंत्रण रखना होगा।

गुरुवंदना महोत्सव: सिद्धगंगा के अधिष्ठाता लिंगायक्य डॉ. श्री शिवकुमार महाशिव योगी के 117वें जन्मोत्सव पर।

» स्वामी जी ने लाखों गरीब बच्चों के जीवन को योगमय बनाया : प्रधान अध्यक्ष

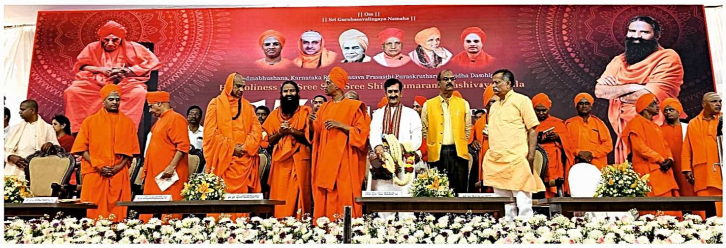

मैसूर (कर्नाटक)। सिद्धगंगा के अधिष्ठाता लिंगायक्य डॉ. श्री शिवकुमार महाशिव योगी के ११७वें जन्मोत्सव एवं गुरुवंदना महोत्सव में देशभर से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा। जन्मोत्सव के इस कार्यक्रम में, प्रधान अध्यक्ष सिद्धलिंग श्री के नेतृत्व में हरगुरुचारमूर्तियों ने शिवकुमार श्री के मंदिर में एक विशेष पूजा अर्चना की। श्री शिवकुमार शिवयोगी की ११७वीं जयंती के उपलक्ष्य में मठ के गौशाला सिद्धेश्वर मंच पर ११७ दीपक जलाए गए। कार्यक्रम में परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज (पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार) ने कहा कि शिवकुमार श्री कोई साधारण संत नहीं हैं। देश के अब तक के सबसे महान संतों में से एक थे, उन्होंने लक्षनाथ को एक महान संत बताया, जिन्होंने गरीब बच्चों के लिए भोजन, आवास और शिक्षा की व्यवस्था की।

सिद्धगंगा श्री के दर्शन की कृपा से हजारों लोगों के कष्ट दूर हुए एवं मन-आत्मा में नव ऊर्जा का संचार महसूर होता हैं। आध्यात्म के साथ-साथ लोगों की सेवा के लिए खुद को समर्पित करने वाले पूज्य शिवकुमार श्री एक महान व्यक्ति थे। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे ऐसे गुरु की गुरुवंदना महोत्सव का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने कहा कि मुझे भी लिंगायत संन्यासी जी का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सदैव प्राप्त हुआ। सिद्धगंगा श्री ने कायाकेव कैलाशा के सिद्धांत का अक्षरशः पालन किया था। निस्वार्थता और त्याग के प्रतिनिधि होने के नाते, उन्होंने वर्ग, धर्म, जाति की परवाह किए बिना सभी को एक समान देखा। प.पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहां कि पूज्य शिवकुमार श्री ही थे जो साम समाज के प्रणेता बसवन्ना के मार्ग पर चले। श्री मुंदरगी अन्नदानेश्वर महासंस्थान मठ के अध्यक्ष डॉ. श्री अन्नदानेश्वर स्वामीजी, श्री मुरुगा मठ, धारवाड़ के अध्यक्ष डॉ. श्री मल्लिकार्जुन स्वामीजी, गडग श्री वीरेश्वर पुण्याश्रम के अध्यक्ष श्री कल्लैया अजनावरु, श्री सिद्धगंगा मठ के उत्तराधिकारी श्री शिवसिद्धेश्वर स्वामी जी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

■ योग, आयुर्वेद, स्वदेशी, घरेलू उपचार, भारतीय शिक्षा, संस्कार आदि पर मार्गदर्शन दिया।

शोक संदेश

पतंजलि एवं भारत स्वाभिमान परिवार के

श्री दीपक जी (राज्य प्रभारी, भारत स्वाभिमान, जम्मू-कश्मीर) की पूज्या माता जी का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री ओम प्रकाश उपाध्याय जी (पतंजलि योग शिक्षक, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश) की पूज्या धर्मपत्नी **स्व. श्रीमती अमरवती उपाध्याय जी** का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री शैलेन्द्र मिश्रा जी (भारत स्वाभिमान, संरक्षक, मऊ, उत्तर प्रदेश) के पूज्य पिताजी **स्व. श्री जयप्रकाश मिश्रा जी** का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री लक्ष्मी नारायण जी (भारत स्वाभिमान, पूर्व जिला प्रभारी, शांजापुर, मध्य प्रदेश) की पूज्य पिताजी **स्व. श्री हीरालाल जी** का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री राहुल जी (पतंजलि परिवार, गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश) की पूज्य पिताजी **स्व. श्री ताराचन्द जी** का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री शंकर नागपुरे जी (युवा-भारत, पूर्व जिला प्रभारी, नागपुर, महाराष्ट्र) की पूज्य पिता जी **स्व. श्री गुलाबराव किसनराव नागपुरे जी** का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री दिनेश वाघेला जी (पतंजलि परिवार, वरिष्ठ कार्यकर्ता, गोवा) का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

श्री सचिन कारवाल जी (वरिष्ठ कर्मयोगी, राजीव दीक्षित भवन, हरिद्वार) के बड़े भाई **स्व. श्री अनुज वर्मा जी** का आकस्मिक स्वर्गवास विगत माह हो गया है।

हम पतंजलि योगपीठ परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा अपने परमधाम में स्थान और परिजनों को दुःख से निवृत्त होने का सामर्थ्य प्रदान करें।

स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः

१९. जो सदा विचारकर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करें, अन्यायकारियों को हटावे और न्यायकारियों को बढ़ावे, अपने आत्मा के समान सबका सुख चाहे, सो 'न्यायकारी' है, उसको मैं भी ठीक मानता हूँ।

२०. 'देव' विद्वानों को और अविद्वानों को 'असुर', पापियों को 'राक्षस', अनाचारियों को 'पिशाच' मानता हूँ।

२१. उन्हीं विद्वानों, माता, पिता, आचार्य, अतिथि, न्यायकारी राजा और धर्मात्मा जन, पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति का सत्कार करना 'देवपूजा' कहाती है, इससे विपरीत 'अदेवपूजा' इनकी मूर्तियों को पूज्य और इतर पाषाणादि जड़मूर्तियों को सर्वथा अपूज्य समझता हूँ।

२२.'शिक्षा' जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें, उसको शिक्षा कहते हैं।

२३. 'पुराण' जो ब्रह्मादि के बनाए, ऐतरेयादि ब्राह्मण-पुस्तक हैं, उन्हीं को पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा और नाराशंसी नाम से मानता हूँ, अन्य भागवतादि को नहीं।

२४. 'तीर्थ' जिससे दुःखसागर से पार उतरे, यानि कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं, उन्हीं को तीर्थ समझता हूँ, इतर जलस्थलादि को नहीं।

२५. 'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा' इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते है, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

२६.'मनुष्य' को सबसे यथायोग्य स्वात्मवत् सुख-दुःख हानि-लाभ में वर्त्तना श्रेष्ठ, अन्यथा वर्त्तना बुरा समझता हूँ।

२७. 'संस्कार' उसको कहते हैं कि जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे। वह निषेकादि श्मशानान्त सोलह प्रकार का है। इसको कर्त्तव्य समझता हूँ। और दाह के पश्चात् मृतक के लिए कुछ भी न करना चाहिए।

२८. 'यज्ञ' उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार, यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थविद्या, उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान, अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल ओषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूँ।

२९.जैसे 'आर्य' श्रेष्ठ और 'दस्यु' दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हूँ।

३०.'आर्य्यावर्त्त' देश इस भूमि का नाम इसलिए है कि इसमें आदिसृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं। परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्म नदी है। इन चारों के बीच में जितना देश है, उसको 'आर्यावर्त्त' कहते और जो इनमें सदा रहते हैं उनको भी आर्य कहते हैं।

३१.जो सांगोपांग वेदविद्याओं का अध्यापक, सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे, वह 'आचार्य' कहाता है।

नशे में फंसा इंसान भी अपने बच्चों को नशे से बचाना चाहता है। चोर, दुराचारी व व्यभिचारी व्यक्ति भी चाहता है कि उसके बच्चे बेईमान, चोर व चरित्रहीन न हों। –योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज

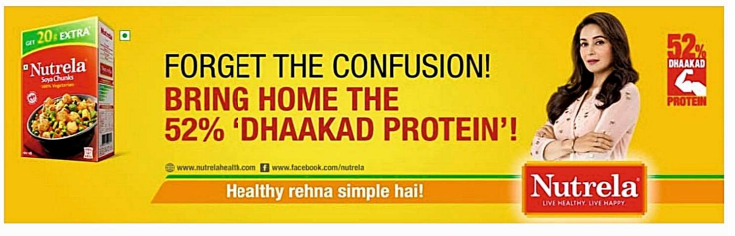

पतंजलि योगपीठ परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की मुख्य झलकियाँ

▶ धर्मपुर (हैदराबाद) Global Spiritual Seminar में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी के सान्निध्य में दादा श्री कमेलश पटेल जी, परम पूज्य आचार्य जी महाराज, स्वामी चिदानन्द मुनी जी, श्री अर्जुन राम मेघवाल जी (पूर्व केबिनेट मंत्री), डॉ. लोकेश मुनी जी, डॉ. ईमाम उमेर जी।

▶ वासंती नवसस्येष्टि यज्ञ होलीकोत्सव के पावन अवसर पर प.पू.स्वामी जी महाराज, पूर्व सांसद साध्वी उमा भारती जी, प.पू.आचार्य जी महाराज। ▶ पतंजलि द्वारा कौशल विकास प्रशिक्षण के विस्तार हेतु (NCVET, Chairperson) श्री निर्मलजीत सिंह कलसी जी एवं डॉ. नीना पाहूजा से भेंट वार्ता।

▶ पतंजलि योगपीठ में कोरिया का प्रतिनिधिमण्डल का हुआ आगमन। ▶ दिल्ली ANI कार्यशाला में Efforts & Research पर वक्तव्य। ▶ पतंजलि योगपीठ एवं उत्तराखण्ड राज्य आजीविका मिशन (USRLM) के सहयोग से पतंजलि के समृद्ध ग्राम ट्रेनिंग सेंटर में हुआ प्रशिक्षण।

▶ पतंजलि योगपीठ आगमन पर प.पूज्य स्वामी जी महाराज एवं प.पूज्य आचार्य जी महाराज से श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी ने मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद लिया। ▶ असम के सूदूर क्षेत्र तामूलपुर के कुमारीकाटा जिले में वृहद् आचार्यकुलम् का भूमि पूजन परम पूज्य आचार्य जी महाराज, श्री बी.एल. वर्मा जी (केन्द्रीय राज्य सहकारिता मंत्री) एवं गणमान्य अतिथिगण द्वारा हुआ।

▶ पतंजलि वि.विद्यालय, पतंजलि आयुर्वेद कॉलेज के 'अभ्युदय वार्षिकोत्सव' के अवसर पर पूज्य महंत स्वामी रघुमुनी जी महाराज (श्री पंचायती अखाड़ा, बड़ा उदासीन निर्वाण) प.पू.स्वामी जी महाराज, प.पू.आचार्य जी महाराज, श्री बी.एल. वर्मा जी (केन्द्रीय राज्य सहकारिता मंत्री), श्री धनसिंह रावत जी (कैबिनेट मंत्री, उत्तराखण्ड), श्री आलोक पाण्डेय जी की उपस्थिति में।

▶ पतंजलि वि.विद्यालय में दर्शन एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में प.पू.आचार्य जी महाराज, पूज्या साध्वी देवप्रिया जी, डॉ. एन.पी. सिंह जी, प्रो. शिवानी वी. जी, डॉ. मनोहरलाल आर्य जी एवं गणमान्य अतिथिगण उपस्थित रहे। ▶ सीकर (राजस्थान) पतंजलि संगठन विस्तार हेतु पू.साध्वी देवप्रिया जी (महिला मुख्य केन्द्रीय प्रभारी) की कार्यकर्ता बैठक। ▶ अयोध्या (उत्तर-प्रदेश पूर्व) योग कक्षा विस्तार हेतु श्री राकेश कुमार जी (मुख्य केंद्रीय प्रभारी) की संगठन विस्तार हेतु कार्यकर्ता बैठक।

▶ पतंजलि योगपीठ में नेपाल योग शिविर में परम पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज द्वारा नेपाल राष्ट्र से आये कार्यकर्ता बहनों का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद दिया। ▶ पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार में राष्ट्र संत, नेपाल केसरी जैन मुनि जी डॉ. मणिभद्र जी महाराज 'सर्वोदय शांति यात्रा' के मध्य आगमन हुआ।

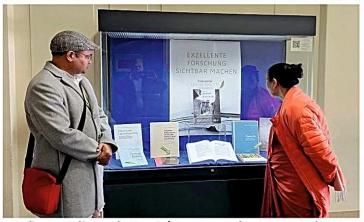

▶ योग, आयुर्वेद, स्वदेशी एवं वैदिक शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु नीदरलैंड, जर्मनी, पेरिस में पूज्या साध्वी देवप्रिया जी (महिला मुख्य केन्द्रीय प्रभारी), आदरणीय राकेश कुमार जी (मुख्य केन्द्रीय प्रभारी) द्वारा विभिन्न देशों में के विश्वविद्यालय व पुस्तकालयों में भ्रमण।

स्वामी, सम्पादन, प्रकाशक व मुद्रक राकेश द्वारा ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, वेद मंदिर, अशोक टॉकीज के सामने, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से छपवाकर 101, विद्या विहार कॉलोनी, कनखल, हरिद्वार-249408 (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरिद्वार होगा।

'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर महिला पतंजलि योग समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण झलकियाँ

असम :

बिहार : दक्षिण

हिमाचल प्रदेश :

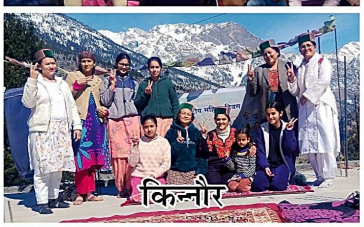

कोलकाता :

पं.बंगाल :

'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर महिला पतंजलि योग समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण झलकियाँ

जम्मू कश्मीर :

झारखण्ड :

उत्तर प्रदेश :

पंजाब :

'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर महिला पतंजलि योग समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण झलकियाँ

दिल्ली :

बदरपुर

चाँदनी चौक

छतरपुर

करावलनगर

मयूरविहार

नोएडा

ग्रीनगर

गुजरात :

अहमदाबाद-उत्तर

अहमदाबाद-दक्षिण

आनन्द

वडोदरा गांधीनगर

मध्य प्रदेश :

दतिया

रतलाम देवास

गुना

ग्वालियर

मंदसौर

खरगोन

खण्डवा उज्जैन हरदा

राजस्थान :

बलोतरा

भीलवाड़ा

चित्तौगढ़

डूंगरपुर

जैसलमेर

निम्बाहेड़ा

प्रतापगढ़

उदयपुर ग्रामीण

उदयपुर शहर

राजसमन्द

सिरोही

महाराष्ट्र :

हिंगोली

वर्धा

यवतमाल